असली प्रयाग महात्म्यः

मकर मास व कुम्भ महात्म्यः सहित
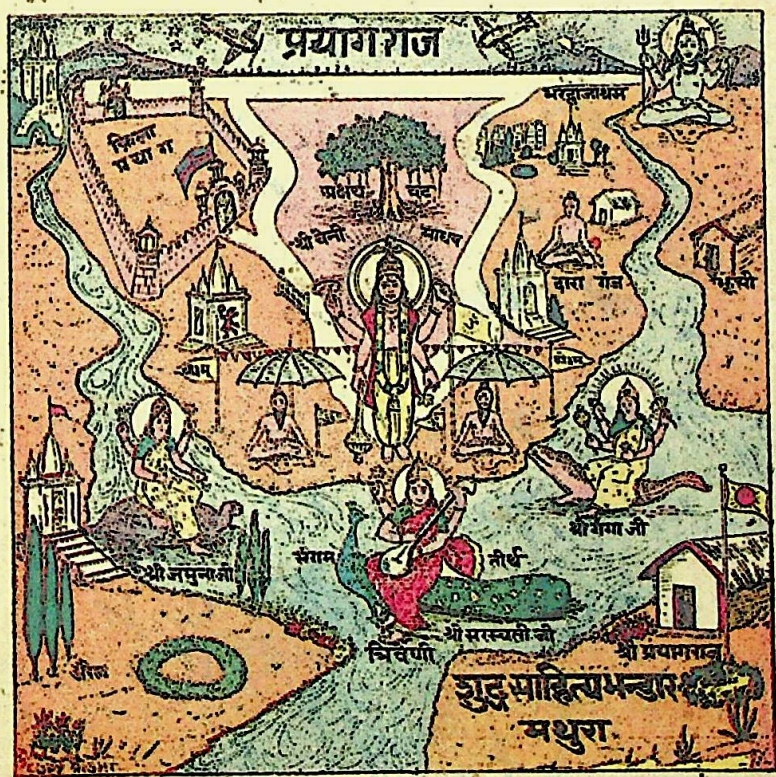
लेखक—जगन्नाथप्रसाद शर्मा

प्रकाशक—शुद्ध साहित्य भण्डार, मथुरा। शाखा—आगरा।

मिलने का पता—

ला० मुरारीलाल बुकसेलर, नया बाजार, मथुरा।

असली
प्रयाग महात्म्यः
वन्दना

शुण्डा दण्डे मोदकं धारयन्तं, करणोत्तालैः षट्पदा वारयन्तं।
नेत्र प्रान्ते सच्चिदानन्द दन्तं, वन्देऽहं श्री विघ्ननाशं गणेशं ॥

जहाँ गङ्गा है गोविन्द वहीं, गोविन्द जहाँ वहाँ गङ्गा है।
गङ्गा गोविन्द के दर्शन से, धन धाम पवित्र मन चङ्गा है ॥
ज़न मन से धन से भक्ती से, सेवा कर उस सुखदाई की।
जीवन पवित्र हो जायगा, ज़य बोलो गङ्गा माई की ॥

जिस समय धर्मक्षेत्र रणभूमि से विजय लक्ष्मी ग्रहण कर युधिष्ठिरजी महाराज अपनी राजधानी हस्तिनापुर में आकर बसे; और राज वैभव तथा आनन्द का उपभोग करने लगे उस समय अनायास एक दिन दुर्योधनादि भ्राताओं के वियोग के कारण शोक सागर में निमग्न हुए धर्म धुरन्धर

महाराज युधिष्ठिरजी कोई ऐसा मार्ग, जप, तप, तीर्थ, स्नान, योग जानने की चिन्ता करने लगे जिससे पाप क्षय हों और चित्त को धैर्य्य तथा शान्ति मिले। इतने में काशी आदि तीर्थों में भ्रमण करते हुए महर्षि मारकण्डेयजी हस्तिनापुरी की राज सभा में आये। मारकण्डेयजी को आता देख सब ने उठ कर साष्टांग दण्डवत की। युधिष्ठिरजी बोले! आज मेरा जन्म सफल हुआ, मेरे अहोभाग्य हैं जो आपने मुझे घर बैठे दर्शन दिये और मुझे शोक-सागर में डूबने से बचाया। तत्पश्चात् सर्व प्रथम ऋषिवर के चरण धो पादोदक लिया और आतिथ्य-सत्कार कर आदर पूर्वक आसन पर बिठा, अपने शोक निवृत्ति का उपाय पूछने लगे। सब वृतान्त सुनने के पश्चात् मारकण्डेय जी बोले हे राजन्! क्षत्रियों को क्षात्रधर्म ग्रहण कर युद्ध करने तथा योद्धाओं को मारने से कभी पाप नहीं लगता इस

लिये आप शोक को त्याग दीजिये और भ्रातृ वियोग तथा पापों के क्षय के लिये तीर्थ स्नान कीजिये। यह सुन राजा बड़े प्रसन्न हुए और हाथ जोड़ कर उत्तमोत्तम और पवित्र तीर्थ का नाम पूछने लगे।

मारकण्डेय जी बोले ! राजन् सब तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ श्री प्रयागराज है। जहाँ के स्नान दान, कल्पवास और देह त्याग करने से मनुष्य सब पातकों से मुक्त होकर अनन्त फल पाता है। यह सुन साक्षात धर्ममूर्ति युधिष्ठिरजी महाराज भगवान मारकण्डेयजी से शंका-समाधान करने लगे। महाराज आप अन्य तीर्थों के अतिरिक्त प्रयागराज की अत्याधिक प्रशंसा क्यों करते हैं? यह सुन कर मारकण्डेयजी कहने लगे। राजन सुनिये! प्रलय काल के समय जब सूर्य्य चन्द्र पवन आदि सब नष्ट प्रायः हो जाता है और केवल समुद्र ही शेष रह जाता है,

उस समय स्वयं विष्णु भगवान अक्षय-वट तले शयन करते हैं और देव ऋषि, गंधर्व, सिद्ध, चारण, ब्रह्मा, रुद्र, दिग्गज, दिग्राज, पितृ, नाग, पवित्र सरिता और सम्पूर्ण तीर्थ यहीं आकर विष्णु भगवान् के निकट विराजते हैं। हे शूर शार्दूल भूपति प्रयागराज से पुनीत क्षेत्र त्रिलोकी में भी दूसरा कोई नहीं है। तीर्थराज का केवल नाम श्रवण करने से ही पाप रूपी पक्षी पलायन कर जाते हैं और नाम संकीर्तन से तो महापातक नष्ट हो जाते हैं। प्रयाग क्षेत्र की रज एवं गङ्गा, यमुना सरस्वती तथा त्रिवेणी स्पर्षित वायु के स्पर्ष मात्र से प्राणी घोर पापों से मुक्त हो जाता है। त्रिवेणी पर अभिषेक करने से राज-सूय और अश्वमेध यज्ञ के समान फल मिलता है। हे कुरुनन्दन साठ करोड़ दश हजार तीर्थ प्रयागराज के समीप हैं। प्रयाग में प्राण त्याग करने से जो गति योगियों की होती है वही

उस प्राणी की होती है। और वह कैवल्य पद को प्राप्त होता है, जो देवताओं को भी दुर्लभ है। हे राजन् अक्षयवट के पास वास करने और प्राण त्याग करने से ब्रह्म लोक मिलता है और जब उसका पुण्य क्षय हो जाता है तो वह किसी धनाढ्य के यहाँ जन्म लेकर सांसारिक सुख भोगता है और लक्ष्मी उसकी दासी बन कर रहती है।

प्रयाग क्षेत्र और उसके तीन भाग

गङ्गा यमुना के मध्य भाग का नाम प्रयाग है। यमुना के पल्ली पार के भाग को अरैल या अलर्कपुर कहते हैं। गङ्गाजी के किनारे पर झूसी या प्रतिष्ठानपुर है, इसे पुराणों में आहवनीय अग्नि, गार्हपत्याग्नि और अलर्कपुर को दक्षिणाग्नि माना है। अरैल के निवास से दक्षिणाग्नि उपासना का पुण्य फल मिलता है। इसलिए इन तीनों को प्रयाग ही कहते हैं। प्रयाग का पूर्व नाम

प्रजापति क्षेत्र है ब्रह्मा के अक यज्ञने करने से इसका नाम प्रयाग हुआ। तीनों घाटों पर स्नान करने का समान फल है। जहाँ सितासित अर्थात् नीला और सफेद जल दिखाई दे, जल में शीतलता तथा उष्णता प्रतीत हो उसे ही सङ्गम कहते हैं। सङ्गम स्नान नौका में चढ़ कर ही किया जा सकता है। यहाँ पर देह त्याग का विशेष फल है।

देखने योग्य स्थान

इलाहाबाद यूनीवर्सिटी, नया व पुराना हाईकोर्ट, झूसी की सुगर मिल, नैनीग्लास-वर्क, किले के सामने हनुमानजी की विशाल मूर्ति भीतर अक्षयवट और अन्य देव-ताओं के दर्शन हैं। दारागञ्ज में श्री बेनीमाधवजी का मन्दिर, छतनगा मुँशीजी के बगीचे में शङ्खमाधव, नागेश्वर नाथजी सुजावन देवता वीकर (देवरिया) भारद्वाजाश्रम, चक्र-माधव गदामाधव, पद्ममाधव, अनन्त माधव,

वटमाधव, अक्षयवट, विन्दुमाधव, मनोहर माधव, परमेश्वरनाथ, अशिमाधव, सङ्कष्टहर माधव सङ्कष्ट हर गणेश, सङ्गम में जल रूप से आदि वेणीमाधव, अरैल में बिष्णु माधव सरस्वती कुण्ड, वासु की नाग स्थान, दशाश्वमेधघाट, सोमेश्वरनाथ, शिव कोटि, हंसतीर्थ, सन्ध्यावट, समुद्र कूप, प्रयाग में श्री वल्देवजी का मन्दिर अहियापुर में कल्याणी देवी। चौक और दारागंज के बीच में अलोपी देवी। सैनी बहुमूलक नाग स्थान, नीमा घाट, मानस तीर्थ शिव कोटितीर्थ, मनसइताकामुख आदि दर्शनीय स्थान हैं।

मकर तथा कुम्भ स्नान महात्म्यः

पौष शुक्ला पूर्णिमा से माघ शुक्ला पूर्णिमा तक माघ मेला और माघ स्नान होता है। माघ कृष्णा एकादशी मौनी अमावस, वसन्त पञ्चमी, माघ शुक्ला एकादशी और माघ शुक्ला पूर्णिमा ये स्नान के पर्व दिन हैं। यदि दीन क्षीण मनुष्य इन दिनों में तीन दिन भी स्नान कर ले तो वह दीर्घजीवी और लक्ष्मीवान् वनता है। माघ में होम दान और तप यह तीन बातें ही मुख्य हैं। इनके करने से अनन्त फल मिलता है। माघ स्नान

एक मास अन्न त्याग कर दान तपस्या करते हुए करना चाहिए। प्रजा के लिए सकाम भाव से। भगवान को प्रसन्न करने के निमित्त सात्विक भाव से। शारीरिक शुद्धि के लिये श्रद्धाभाव से या अन्य वस्तु प्राप्ति की इच्छा से यह स्नान किया जाता है। पद्मपुराण के उत्तर खण्ड में लिखा है—सैकड़ों पापों से घिरा मनुष्य यदि माघ में जब मकर राशि को सूर्य भोगते हों त्रिवेणी के श्वेत श्याम जल में स्नान करे तो उसे फिर गर्भ धारण नहीं करना पड़ता। यदि माघ मास में कसाई भी संगम में स्नान कर लेता है तो, उसे परम पद मिलता है। गुप्त रूप से मिली हुई सरस्वती मय जो सितासित त्रिवेणी की धारा है उसे ब्रह्मा ने विष्णु लोक का मार्ग बना दिया है। मलीन मेघमाला के हटने पर जिस तरह शरद का चन्द्रमा देदीप्यमान होता है उसी प्रकार संगम में स्नान करने से मनुष्य भी सर्व पापों से मुक्त हो जाता है और वह दिव्य देह प्राप्त करता है। मकर संक्रांति को शुद्ध अन्तःकरण और एकाग्र चित्त से नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए मौन रख कर स्नान करना चाहिये।

मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधवः।
स्नानेनानेन भो देव यथोक्त फलदो भवः॥

अमृत विभक्ति और कुम्भ की व्युत्पत्ति

जब देवता और राक्षसों ने सिन्धु मन्थन करने पर १३ रत्नों के पश्चात् अमृत कुम्भ अर्थात् अमृत का घड़ा लिये धन्वन्तरी भगवान को समुद्र से निकलता देखा तब देवताओं ने इन्द्र पुत्र जयन्त को कुम्भ ले भागने का संकेत किया। जिससे राक्षस अमृत पीकर कहीं अमर हो हमें और न सतावें। जब जयन्त घड़ा ले भागे तो राक्षसों ने उसका

पीछा किया, इस पर परस्पर १२ दिन-रात युद्ध होता रहा और अमृत-कुम्भ के लिये छीना-झपटी होती रही। उस समय वृहस्पति, सूर्य, चन्द्र और शनिदेव ये कुम्भ की रक्षा करते रहे। अमृत को टपकने से चन्द्रमा ने, कुम्भ को टूटने से सूर्य्य ने, दैत्यों से वृहस्पतिजी ने और जयन्त के पीने से शनिदेव ने उसकी रक्षा की इन ग्रहों के योग से कुम्भ जहां-जहां गिरा उन्हीं स्थानों पर कुम्भ पर्व मनाया जाता है। झगड़ा तय करने के लिये स्वयं विष्णु भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर बड़ी बुद्धिमत्ता से राक्षसों को रिझाते हुए सब अमृत देवताओं में ही बांट दिया तो दैत्य हताश होकर चले गये। इसी प्रसंग से कुम्भ नाम की व्युत्पत्ति हुई है।

कुम्भ पर्व

कुम्भ पर्व माघ कृष्ण पक्ष ११ मङ्गलवार रात्रि को ५० घड़ी ६ पल अर्थात् १३ जनवरी सन् १९४२ को रात के ३ बजकर ३२ मिनिट पर होगा। प्रथम तो पश्चिम वाहिनी गंगा दूसरे गंगा यमुना और सरस्वती संगम, बेनी माधव और अक्षयवट तथा माघमास प्रयागराज का वास इस पर भी कुम्भ पर्व और एकादशी इस वर्ष ऐसे योग आ मिले हैं मानो सोने में सुगन्धि। कुम्भ पर्व पर स्नान करने का अनन्त फल है। इस अवसर पर बड़े-बड़े महर्षि और राजर्षि पूर्णब्रह्म प्राप्ति के लिये एकत्रित होकर भांति २ की समाधि आसन द्वारा तपस्या करेंगे। जिनके दर्शन-मात्र से ही आनन्द प्राप्त होगा सहवास का तो कहना ही क्या?

जब सूर्य्य मकर राशि और वृहस्पति वृषराशि भोगते हैं उस समय प्रयागराज में कुम्भ का मेला लगता है। मनुष्यों के १ वर्ष के बराबर देवताओं का एक दिन रात होता है; और देवताओं की १२ दिवस १२ रात्रियां मनुष्यों के १२ वर्ष के समान होती हैं, इसी कारण १२ वर्ष में कुम्भ पर्व पड़ता है।

मनोहराय देवाय माधवाय नमोनमः

के पश्चात् इस महात्म्य को समाप्त करता हूँ। और बालकों के पालन पोषण और रक्षा के उपाय वर्णन करने के पश्चात लेख को विश्राम दूंगा।

हम और हमारी सन्तान

प्रत्येक मनुष्य के किसी कार्य में आगे बढ़ने पर उसकी जिम्मेदारी हो जाती है। जो अपनी जिम्मेदारी को नहीं समझता अथवा उसकी लापरवाही करता है लोग उसको मूर्ख कहते हैं और उसको अपनी लापरवाही का दंड भी भुगतना पड़ता है।

अत्यन्त खेद की बात है कि हमारे एक बड़े महत्वपूर्ण जिम्मेदारी की ओर जिस पर न केवल हमारी वरन् हमारे देश और समाज की उन्नति निर्भर है उस ओर बहुत ही कम मनुष्यों का ध्यान जाता है। हमारी अज्ञानता का ही यह परिणाम है कि प्रति वर्ष हजारों बच्चे असमय में ही काल के ग्रास में चले जाते हैं। जब बीमारी का पूरा असर हो जाता है तब हजारों रुपये खर्चने पर भी बच्चे के प्राण बचाने कठिन हो जाते हैं। ऐसी दशा में भी आपका ध्यान अपनी लापरवाही की ओर नहीं जाता वरन् भाग्य और विधाता को दोष देकर ही अपने दुःखित हृदय को शान्त करने का प्रयत्न करते हैं। आप अपनी जिम्मेदारी को भूलकर अपने प्यारे बच्चे के प्राण तक गवां देते हैं।

आज हम आपके सामने कुछ ऐसी बातें रखना चाहते हैं जिनसे आप समझ सकें कि बच्चों को उत्तम रीति से पालन-पोषण करने में हमें किन-किन बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये। हमारा अनुमान है कि थोड़े समय में ही अनुभव-

हीन माताऐं भी अपने गोद के खिलौने प्यारे बच्चों का बहुत कुछ उपकार कर सकेंगी।

बालकों का स्वभाव

अपने जीवन के बारह महीनों में बालक पर संसार के नवीन वातावरण का बड़ा प्रभाव पड़ता है इन दिनों में बालक के मस्तिष्क और शरीर में बड़े परिवर्तन उपस्थित होते हैं। इसी समय बालक के आगामी आचरण बनने का श्रीगणेश होने लगता है।

बालक का वजन

जन्म के समय सामान्यतः बालक का वजन ७ पौण्ड यानी साढ़े तीन सेर के लगभग होता है परन्तु कभी कोई कोई पूरे बच्चे ढाई, तीन सेर के और कोई कोई ५-६ सेर तक के होते देखे जाते हैं। जन्म के पीछे पहले १० दिन में बालक का वज़न कुछ घटता है परन्तु दस दिन पीछे ही वह कमी पूरी होने लगती है। पहले तीन महीने तक यह वजन ।।। छटांक प्रति सप्ताह के हिसाब से बढ़ता है। इस तरह तीन महीने के बालक में ६ सेर तक वजन हो तो बालक को निरोग और तन्दुरुस्त समझना चाहिये। इसके बाद ६ महीने पूरे होने तक बालक की वृद्धि २। छटांक प्रति सप्ताह होनी चाहिये यहां तक यदि बालक निरोग है तो ६ महीने में उसका वज़न जन्म के समय से दुगना और साल भर में तिगुना हो जाना चाहिये अर्थात् पहली वर्षगांठ के समय बालक का वजन १०।। सेर होना चाहिये। इसलिये बालक के स्वास्थ्य में वृद्धि हो रही है या नहीं, इस बात को जानने के लिये यह बात बड़ी आवश्यक है कि शुरू में सालभर तक प्रति मास बालक का वजन लेते रहना चाहिये।

इसी तरह सामान्यतः बालक जन्म के समय १२ इन्च लम्बा होता है। यह लम्बाई भी धीरे-धीरे बढ़कर साल भर में ३० इन्च हो जाती है।

दांत निकलना

इसी पहले वर्ष में ही बड़े महत्व-पूर्ण परिवर्तन बालक के शरीर की बनावट और क्रियाओं में भी होते हैं। इनमें सबसे अधिक दुखदाई और प्रत्यक्ष परिवर्तन है दांत निकलना, जो सातवें महीने में आरम्भ हो जाता है। पहले नीचे की तरफ बीच के दो दाँत निकलते दिखाई देते हैं। इनके निकलने के एक महीने के भीतर ही उन्ही दाँतों के ठीक मुकाबिले में ऊपर के दो दांत चमकते हैं। दांत निकलने का यही समय बहुधा देखा जाता है। पर किसी-किसी बालक के तीसरे महीने से दाँत निकलने शुरू हो जाते हैं और कभी कभी ऐसे बालक भी देखने में आते हैं जिनका एक दो दाँत जन्म के समय ही निकला हुआ रहता है परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। किसी बालक के साल भर तक दाँत नहीं निकलते परन्तु दांतों का बहुत जल्दी निकल आना या बहुत दिन तक न निकलना यह दोनों ही सूरतें ऐसी हैं जिसमें बालक को कोई न कोई रोग अवश्य ही हो जाता है, जिसमें (RICKETS) सूखा की बीमारी और दाँतों में कीड़ा लगना मुख्य हैं।

दांतों के निकलने के समय में भी माता की थोड़ी सी ही असावधानी से बालक को तकलीफ बढ़ जाती है।

साधारणतः बालकों को दांत निकलने के समय में या तो बदहजमी होकर दस्त आने लगते हैं या कब्ज रहने लगता है। कान में दर्द उठ कर अन्दर से मवाद भी आने लगता है और यह तकलीफ कभी कभी इतनी बढ़ जाती है कि बालक को बेचैन बनाये रखती है। कमजोर बच्चे जिनके सूखा की बीमारी हो कभी-कभो बेहोश होकर उनके हाथ पैर ऐंठने गलते हैं।

इस समय माता पिता यदि थोड़ी सावधानी रखें तो बालक को बहुत से कष्टों से मुक्त कर सकते हैं। कोई साफ कड़ी लकड़ी

का टुकड़ा या रबर की नली बालक को पकड़ा देने से वह मुँह में रखकर काटता है इससे दाँतों के निकलने में सुविधा मिलती है। हर समय बालक को खुली हवा में रखना चाहिये और यदि कब्ज हो तो हमारे यहाँ की बालघुटी, या साफ किया हुआ अन्डी का तेल, या अंजीर शर्बत, या बड़ी हर्र, काला नमक, फूली-हींग, फूला सुहागा घिस कर थोड़ा देना चाहिये।

यदि बालक को माँ का दूध न देकर गाय का दूध दिया हो तो दूना पानी मिलाकर देना चाहिए यदि बालक मां का ही दूध पीता हो तो उसको दाँत निकलने के दिनों में कदापि नहीं छुड़ाना चाहिए। बकरी का दूध भी हितकर है।

जहां तक हो सके नौ महीने तक तो बालक को मां का ही दूध पिलाना चाहिए। क्योंकि माता का दूध एक तो हजम जल्दी होता है और दूसरे उसमें किसी तरह के कीड़े या जर्म्स (Germs) नहीं होते और इस कारण से बालक को कोई रोग भी उत्पन्न नहीं होता। प्रसव के दो दिन पीछे तक तो कभी २ स्त्री के स्तन से दूध नहीं उतरता और बालक को इन दो दिनों में भूख भी ज्यादा नहीं सताती, इसलिए दिन में दो तीन दफे उबाला हुआ पानी थोड़ा ठण्डा करके दो चार बूंद बालक को देना काफी होता है। तीसरे दिन बालक की माता के स्तनों में दूध ठीक से उतर आता है उस हालत में भी बालक को नियमित समय में तीन-तीन घण्टे पर स्तन पान कराना चाहिए और रात के छैः घन्टे दूध पिलाना चाहिए। बालक के स्तन पान का समय प्रातःकाल ४ बजे, फिर सुबह ७ बजे, १० बजे, दोपहर एक बजे, तीसरे पहर ४ बजे, शाम को ७ बजे और रात को १० बजे नियत हो जाना चाहिये। हर समय अनियमित रीति से दूध पिलाना भी हानिकारक होता है। ४ महीने होने पर दूध देने के समय का अन्तर ३ घन्टे की बजाय ४ घन्टे का कर देना चाहिये।

माता को अपना एक स्तन एक दफे में बालक को पिलाना चाहिए, यदि एक स्तन को पीकर बालक संतुष्ट न हो तो दूसरा देना चाहिए, परन्तु पहिले दिये हुये 'स्तन के बिलकुल खाली हो जाने पर दूसरा स्तन बालक को देना चाहिये।

बालकों को माता के दूध के अतिरिक्त जो पदार्थ हितकर हो सकते हैं यह हैं—

(१) गाय का स्वच्छ दूध (२) बोतलों में आने वाले चूर्ण रूप के दूध और अन्य बालोपयोगी पेटेन्ट फूड। परन्तु इस सब में सर्वोत्तम वस्तु गाय का दूध ही है, क्योंकि इसके गुण माता के दूध से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं।

हाल के बच्चे के दूध में दुगुना पानी मिलाना चाहिए। दो महीने के बच्चे को बराबर पानी और इसी तरह पानी को बराबर घटाते जाना चाहिये, जिससे कि दस महीने के बच्चे को खालिस दूध हजम करने की शक्ति उत्पन्न हो जाय।

गाय के दूध में बहुत से अवगुण भी हैं, पेट में जाकर अन्दर की खटाई से जो इसका दही बनता है, वह मां के दूध से बने दही की अपेक्षा गरिष्ट होता है, इसलिये बालक के पीने को बनाये हुये आधी छटाँक दूध में एक ग्रेन साइट्रेट आफ सोडा (Citrete of soda tablets) की टिकियाँ जो अंग्रेजी दवा बेचने वालों के यहाँ मिलती हैं मिला दी जांय तो दूध का यह दोष जाता रहता है।

दूध-चूर्ण (Dried milk) का उपयोग गर्मी के दिनों में करना चाहिये या उस समय जब कि गाय का ताजा दूध न मिले तब एक चमचा पाउडर दुगने पानी में मिलाना चाहिए।

बरसात के दिनों में पाचन शक्ति बड़ों की ही स्वभावतः मन्द पड़ जाती है तब बालकों का तो कहना ही क्या है। इन दिनों में बालकों को जिनकी अवस्था साल दो साल तक की होती है दस्तों

की बीमारी विशेष रूप से होती है। इसे अंग्रेजी में "इन्फैन्टायल कोलेरा (Infantile Cholera) बालकों की विशूचिका" कहते हैं, और यह रोग प्रतिवर्ष सैकड़ों ही बालकों के प्राण हरण कर लेता है। इस रोग का आरम्भ भी तत्काल हो जाता है और पहले बालकों को उल्टियाँ आती हैं और उसके बाद हरे रङ्ग के दस्त शुरू हो जाते हैं, त्वचा पीली पड़ कर सिकुड़ जाती है और हड्डियों पर से झूल जाती है। दो या तीन दिन या इससे भी कम समय में बालक के शरीर में रस पदार्थ नष्ट हो जाने से मृत्यु हो जाती है।

ऐसे मौके के लिये हमने अपने सामान्य श्रेणी के गृहस्थ भाइयों के हित के लिए बड़े-बड़े अनुभवी और विचारशील वैद्यों और डाक्टरों की सलाह से उत्तमोत्तम अत्यन्त गुणकारी और विशेषतः बालोपयोगी औषधों के मिश्रण से "बालसुधा" नामक मीठी दवा तैयार की है, इसके गुण और स्वाद दोनों ही बालकों के लिये, अत्यन्त हितकर और रुचिकर हैं! इसके सेवन से बालक हृष्ट पुष्ट और बलवान बन जाते हैं।

बालसुधा के सेवन से हड्डियाँ बलिष्ठ होकर शरीर सुडौल और सुन्दर बन जाता है—बालकों के पहिले ही साल में जब कि उनके शरीर के प्रायः सब ही अवयवों की वृद्धि बड़ी तीव्र गति से होती है किन्तु बालकों के माता-पिता के दोष से उत्पन्न हुई शारीरिक दुर्बलता के कारण जो क्षीणता-सी बनी रहती है; 'बालसुधा' के सेवन से उसमें एक विलक्षण चमत्कार दिखाई देने लगता है।

"बालसुधा" के समान दूसरी औषधि शरीर की नस-नस में स्फूर्ति और उत्साह पैदा करने वाली नहीं है क्योंकि यह ताजा रुधिर पैदा करने वाली अव्वल दर्जे की चीज है। इसके सेवन से बालकों में शारीरिक बल तो बढ़ता ही है परन्तु आत्मबल की भी वृद्धि होती है। बालसुधा सेवन करने वाले बालक डरपोक नहीं

रहते, वे खेल-कूद में अपनी उमर के बालकों से सदैव आगे बढ़े रहते हैं। 'बालसुधा' में कोई धातु का मिश्रण नहीं है यह उन पदार्थों से बनाया गया है जो चिकित्सा-शास्त्र में बड़े २ ज्ञाता और अनुभवी चिकित्सकों द्वारा विशेष रूप से बालोपयोगी माने जा चुके हैं।

आप अपने बालक को 'बालसुधा' विधि पूर्वक पिलाना शुरू तो कीजिये फिर देखिये कि बालक में कैसा चमत्कार बढ़ता है।

दांतों के निकलने में जो बालक की दुर्दशा हो जाती है वह इसके सेवन से सर्वथा नहीं होती क्योंकि दांतों के निकलने के समय बालकों की पाचन-शक्ति बिगड़ कर अनेक बीमारियों का कारण बन जाती है और इसके सेवन से पाचन शक्ति अपना कार्य ठीक से करती रहती है जिससे रोग की उत्पत्ति ही नहीं होती। वास्तव में यह किसी रोग विशेष की औषधि नहीं है बल्कि बालकों के शरीर को रोगों के आक्रमण से बचाने का एक सुदृढ़ कवच है।

बहुत से आदमी जाड़ों में बालसुधा इसलिए नहीं पिलाते कि यह सरदी करेगा, यह उनकी भारी भूल है जाड़ों में पिलाने से सर्दी, जुकाम, कुकर खांसी आदि सर्दी से उत्पन्न होने वाले रोग नहीं होने पाते।

इति शुभम्

अस्सी समाचार पत्रों
तथा-वैद्य-डाक्टर और चिकित्सकों
द्वारा प्रशंसित

खरीदते
समय
केवल
सुख संचारक
द्राक्षासव
ही
खरीदिये
— सूचीपत्र —
मुफ्त
मंगाइये

सुखसंचारक कंपनी लिमिटेड मथुरा